RNI No - RAJHIN/2003/9899 Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 July 2018 Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd July 2018

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : सोलहवां | अंक : तीसरा | जुलाई–2018

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

प्रभु का हुक्म

5

शेख फरीद साहब की बानी (16 पी.एस.राजस्थान आश्रम)

दाता जी, कित्थे गयों, प्रीतमा वे, कित्थे गयों, ×2

हत्थीं अपणी बाग सजा के, आपे तूं ऐह बूटे ला के, ×2
नहीं सी छड जांणा सानूं, मालिया वे, कित्थे गयों .....

पता जे हुंदा नाल ही जांदे, काहनूं ऐडे दुःखड़े उठांदे, ×2
जे चिर लौणां सी, रखवालिया वे, कित्थे गयों .....

हुण तां डोले जग दा बेड़ा, बन्ने लावे होर हुण केहड़ा, ×2
तेरे बाजों कौंण बचावे, खुशहालिया वे, कित्थे गयों .....

सुण फरियाद 'अजायब' दी आंवीं, आ के दुःखियां दा दर्द मिटावीं, ×2
सोहणा आ के दर्श दिखा जा, संगत देया वालिया वे, कित्थे गयों .....

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 & 98 71 50 19 99
विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक–नन्दनी, **सहयोग**–सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पॉलीकम ऑफसैट, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। मूल्य : 5/-
e-mail : dhanajaibs@gmail.com 196 Website : www.ajaibbani.org

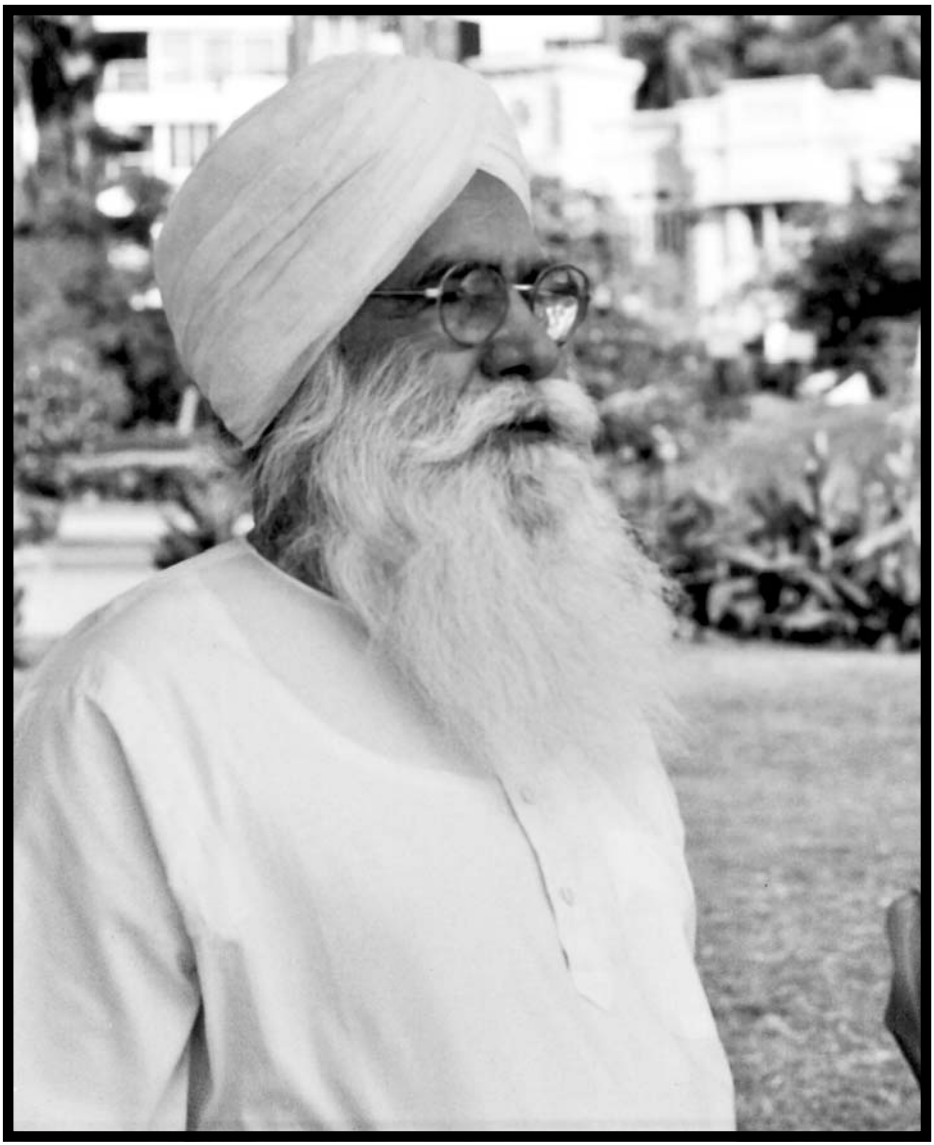

16 पी. एस.रायसिंह नगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम

03 से 05 अगस्त 2018

07 से 11 सितम्बर 2018

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

प्रभु का हुक्म

16 पी.एस. राजस्थान आश्रम DVD-101 शेख फरीद साहब की बानी

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे सदा ही संसार में आते हैं उनका रास्ता न कभी बंद हुआ है और न हो ही सकता है। अनेकों महात्मा इस संसार में आए और अनेकों ने आना है। सब महात्मा हमें यही बताकर गए हैं कि परमात्मा एक है और परमात्मा से मिलने का साधन-तरीका भी एक ही है। चाहे कोई पूरब का रहने वाला है चाहे पश्चिम का रहने वाला है, सबकी रचना उस परमात्मा ने की है और वह परमात्मा सबके अंदर शब्द-रूप होकर बैठा है।

महात्मा हमें सदा यही बताते आए कि परमात्मा कुलमालिक है उसका कोई शरीक नहीं, कोई भाई-बंधु नहीं। जिनके अंदर तड़प होती है परमात्मा उन्हें अपने साथ मिलने का साधन व तरीका समझाता है। महात्मा हमें समझाते हैं कि प्रभु को कौन सा श्रृंगार और कर्म-काण्ड मंजूर है? वह नम्रता और आजजी है।

हमारे हुजूर महाराज कृपाल कहा करते थे, ''परमात्मा कुलमालिक है उसे आजजी और नम्रता की ही जरूरत है, वह किसके आगे झुके? सबसे बड़ी नम्रता ही है अगर कोई नम्रता धारण कर सके? वही नम्रता फायदेमंद है कि हम अंदर से झुकें लेकिन नम्रता जग दिखावे के लिए न हो।''

फरीद साहब कहते हैं, ''जो लोग अहंकार करते हैं वे ऐसे हैं जैसे ऊँचे पहाड़ या रेत के टीले पर बारिश का पानी नहीं ठहरता नीचे चला जाता है। इसी तरह जो लोग धन या किसी औहदे का मान करते हैं कि हम तगड़े हैं हमारे जैसा कौन है? वे हुकूमत के नशे में लोगों को अपने पैरों से ठोकरें मारते हैं, ऐसे लोग संसार

से इस तरह खाली हाथ चले जाते हैं जिस तरह रेत के टीले से बारिश का पानी नीचे आ जाता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैः

प्रभु अहंकार न भावी वेद कूक सुनावे।

आप वेदों-शास्त्रों, ग्रंथों-पोथियों को पढ़कर देखें! परमात्मा को अहंकार नहीं नम्रता ही मंजूर है। जिन्हें यह अहंकार है कि हम धनी है हमारी अच्छी सेहत है हमारे ज्यादा भाई हैं या हमारा कुल-कुटुम्ब बहुत ऊँचा है, वे संसार में खाली हाथ आते हैं और आखिर में खाली हाथ ही चले जाते हैं। आगे जाकर कोई भाई-बहन या सभा-सोसायटी हमारी मदद नहीं करते।

फरीद साहब बताते हैं, ''आप किस चीज़ का मान करते हैं क्या सेहत का मान है? बुखार आ जाए तो चार दिन में मुँह पीला पड़ जाता है। जवानी का मान है क्या हमने किसी का बुढ़ापा नहीं देखा? धन का मान है क्या हमने गरीबों को सड़कों पर रूलते हुए नहीं देखा?'' सन्त-महात्मा हमें प्यार से बताते हैं क्या हम कौम का अहंकार करते हैं जब श्मशान भूमि में अपने साथियों को छोड़कर आते हैं तब वहाँ जोर-जोर से रोते हैं बेशक! समाज के कितने भी लोग हों उसका कुछ बिगाड़-सवाँर नहीं सकते। जाने वाला चला जाता है उसकी याद ही आती है वह वापिस दुनिया में नहीं आता। आप किस चीज़ का अहंकार करते हैं? परमात्मा को नम्रता ही प्यारी है। आपके आगे फरीद साहब की बानी रखी जा रही हैः

फरीदा गरब जिन्हां वड्याईआं धन जोबन आगाह।।
खाली चले धणी स्यों टिब्बे ज्यों मींहाह।।

महमूद गजनवी ने हिन्दुस्तान पर सत्तरह-अठारह हमले किए उसने गनीमत का माल बहुत सोना-चांदी लूटा। हिन्दुस्तान किसी

वक्त सोने की चिड़िया कहलाता था लेकिन ऐसे लोगों ने बाहर से हमले करके इस चिड़िया के पंख चुरा लिए। सब मुल्क़ सदा गरीब नहीं होते और न सदा अमीर ही रहते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि कई मुल्क़ जो आज गरीब हैं हो सकता है पहले वे अमीर हों। आज जो मुल्क अमीर हैं हो सकता है किसी वक्त वे भी किसी के अधीन हों और गरीब हों।

इसी तरह महमूद गजनवी ने जब बहुत सारा माल लूट लिया, उसका आखिरी वक्त आया तो उसने अहलकारों को हुक्म दिया, ''लूटे हुए सामान को बाहर सजा दें, नुमाईश लगा दें। मैं देख लूँ कि मेरे पास कितनी धन-दौलत है। जिस धन-दौलत की खातिर मैंने लाखों बच्चे यतीम किए, लाखों औरतों को विधवा बनाया क्या वह सामान आज मेरे साथ जाएगा? अंत समय में मेरे हाथ कफन से बाहर निकाल देना और यह नारा लगाना।''

जुल्म साथ है खाली हाथ है।

मेरे साथ जो कुछ होगा मैं उसका भुगतान तो करूगाँ ही क्योंकि मैंने जो कर्म किए हैं उन्हें मैंने ही भोगना है लेकिन मेरे जाने के बाद दुनिया को यह ज्ञान हो जाए कि जब महमूद गजनवी इस संसार से गया तो उसके दोनों हाथ खाली थे।

फरीदा तिनां मुख डरावणे जिनां विसारिओन नाओं।।
ऐथै दुख घणेरया अग्गै ठौर न ठाओं।।

फरीद साहब प्यार से कहते हैं, ''किनके मुँह देखने के काबिल नहीं, किनकी शक्लें डरावनी हैं? जिन्होंने इंसानी जामा धारण करके परमात्मा का सिमरन छोड़ दिया। परमात्मा की याद भुला दी उन्हें इस संसार में कभी भी सुख नहीं मिलता। वे कभी विषय-

विकारों के जाल में फँस जाते हैं, कभी लड़ाई-झगड़ों के जाल में फँस जाते हैं, कभी काम-क्रोध की लहरों में बह जाते हैं। इन चीजों से हम अपनी शान्ति भंग कर लेते हैं।'' कबीर साहब कहते हैंः

जो प्रभ किए भगत ते वाहंज तिनसे सदा डराने रहिए।

इस संसार में उन लोगों से डरना चाहिए जो प्रभु की भक्ति से दूर चले गए हैं, **प्रभु का हुक्म** नहीं मानते। प्रभु के भक्त सबके अंदर प्रभु को ही देखते हैं वे सबको प्रभु समझकर ही प्यार करते हैं। सन्तों की नजर आत्मा पर होती है बुराई हमारे मन के अंदर है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

नामहीन नकटे नर देखे तिन घस घस नाक वडीजे।

आप कहते हैं, ''हमने दरगाह के अंदर मालिक के दरबार में इन आँखों से देखा है कि काल भी आगे जाकर उन्हें सजा देता है कि आपको इंसान का जामा बड़ा उत्तम मौका दिया था। जो काम आप पशु-पक्षियों के जामे में नहीं कर सकते वह काम नाम की भक्ति, प्रभु की भक्ति, प्रभु के साथ मिलाप इंसान के जामे में ही कर सकते हैं।'' कबीर साहब कहते हैंः

दिवस गवाया खेल के रात गवाई सोए, हीरे जैसा जन्म हैं कौड़ी बदले जाए।।

फरीदा पिछल रात न जागयों जीवंदड़ों मोयों।।
जे तैं रब विसारया त रब न विसरयों।।

फरीद साहब कहते हैं, ''जो इंसान का जामा पाकर रात को नहीं जागता पिछली रात उठकर परमात्मा के साथ मिलाप नहीं करता आप उसे जिंदा न समझें, उसे मरा हुआ ही समझें। मरे हुए में और उसमें कोई फर्क नहीं होता।'' गुरु अर्जुन देव जी कहते हैंः

वद सुख रैनड़िए फिर प्रेम लगा, घट दुःख निंदड़िए पिर स्यों सदा पगा।।

आप रात से कहते हैं कि तू बढ़ जा, हमारा प्यारे के साथ प्यार लगा हुआ है और नींद से कहते हैं कि तू कम हो जा अगर हमें नींद ने आकर घेर लिया तो हमारा परमात्मा के साथ मिलाप टूट जाएगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

चिड़ी चुकी पोह फुटी वगन बहुत तरंग।
अचरज रूप संतन रचे नानक नामे रंग।।

सुबह होते ही पक्षी अपनी-अपनी बोली में परमात्मा का जिक्र करते हैं। मालिक के प्यारे उस वक्त परमात्मा के साथ मिलाप कर लेते हैं। दुनियादार माया के नशे में सोए होते हैं। जो पिछली रात परमात्मा की भक्ति में नहीं जागते उन्हें मरे हुए के समान ही समझें। पिछली रात इसलिए कहा गया है कि चौरासी लाख योनियां भोगने के बाद हमें इंसान का जामा मिला है अगर हम इस जामें में बैठकर सिमरन नहीं करते परमात्मा के साथ मिलाप नहीं करते तो पता नहीं कितना समय हमें उस कब्र में जाकर सोना पड़ेगा! वहाँ से हमें किसी ने नहीं उठाना।

फरीदा कंत रंगावला वड्डा वेमुहताज।।
अल्लाह सेती रत्तयां एह सचावां साज।।

फरीद साहब कहते हैं, ''परिपूर्ण परमात्मा कण-कण में व्यापक है वह किसी का मोहताज़ नहीं, बे-मोहताज़ है। जो महात्मा मालिक के प्यारे, परमात्मा में मिल जाते हैं उनका यही साज़ है, यही कर्म-काण्ड है। आओ भई! भक्ति करो नौं द्वारे खाली करके मेरे साथ मिल जाओ। वे परमात्मा में इस तरह मिल जाते हैं जैसे खंड के अंदर पतासा और पतासे के अंदर खंड है।''

फरीदा दुख सुख इक कर दिल ते लाह विकार।।
अल्लाह् भावै सो भला तां लब्भी दरबार।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि हम देह नहीं आत्मा हैं। यह देह वजूद तो हमें हमारे कर्मों का भुगतान करने के लिए मिली है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं :

सम्पा देख न हरखिए विपत्त देख न रोय।
ज्यों सम्पा त्यों विपत्त है विध्ने रचया सो होय।।

आप दुःख को देखकर घबराएं नहीं धीरज रखें, सब्र रखें और सुख को देखकर अपनी हिकमत न दौड़ाएं कि हम समझदार थे शायद यह सुख हमें हमारी हिकमत से ही प्राप्त हुआ है। अगर दुःख आता है तो वह हमारे कर्मों की वजह से ही आता है अगर सुख आता है तो वह भी हमारे कर्मों की वजह से आता है। मालिक दरवाजा उनके लिए ही खोलता है जो दुःख-सुख को बराबर समझकर उसे दिल पर नहीं लगाते। वे समझते हैं कि यह सब कुछ **प्रभु के हुक्म** में ही होता है।

मौत-पैदाईश प्रभु के हुक्म में ही होती है, **प्रभु के हुक्म** के बिना पत्ता तक नहीं हिलता। हम जीव इस संसार में दुखी और परेशान क्यों होते हैं? जब हम सब कुछ के कर्त्ता-धर्त्ता खुद बन जाते हैं अगर सुख आ गया उस वक्त हम परमात्मा का शुक्र नहीं करते बल्कि ऐसा कहते हैं कि यह हमारी समझदारी से आया है। आप देखें! वही समझदारी होती है, वही घर होता है वही हमारा दिमाग है वही हमारा वजूद है लेकिन दुःख भी आ जाता है। दुःख के समय हम परमात्मा में दोष निकालते हैं और परमात्मा को छोड़ जाते हैं कि वह परमात्मा कहाँ है?

एक बूढ़ी औरत बीमार थी बहुत दुःखी थी। उससे बिस्तर पर लेटे हुए हिला-जुला नहीं जाता था, वह टट्टी-पेशाब भी नहीं जा

सकती थी। घरवालों ने सोचा अगर यह परमात्मा को याद करे तो अच्छा है। घर के लोगों ने उस बूढ़ी औरत से कहा कि तू परमात्मा को याद किया कर। बूढ़ी औरत ने नाराज़ होकर उनसे कहा, ''वाहेगुरु ने तो मुझे इतने दुःख दिए है, इतनी बीमारियाँ लगाई हैं।'' इसलिए सन्त हमें प्यार से कहते हैं परमात्मा ऐसे आदमियों के लिए दरवाजा किस तरह खोले!

फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वज्जेंह् नाल।।
सोई जीउ न वजदा जिस अल्लाह् करदा सार।।

फरीद साहब कहते हैं, ''हम दुनिया में एक- दूसरे की नकल करते हैं कि उसने यह किया है मैं भी करूँ। उसने काम भोगा है मैं भी काम भोगूं। वह नाम जपता है मैं भी नाम जपूं लेकिन अपने दिल के अंदर कुछ नहीं होता, एक-दूसरे को देखकर उत्साह करते हैं। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि तू अपने आपको भक्त कहलवाता है लेकिन जिस राह पर दुनिया चल रही है तू भी उसी कर्म-काण्ड में फँसा हुआ है, उसी तरह नकल कर रहा है?''

अब फरीद साहब कहते हैं कि मेरी समझ में आया है कि जिसके ऊपर अल्लाह-भगवान मेहर करता है जिसके लिए अपना दरवाजा खोलता है वह जीव दुनिया की चाल नहीं चलता क्योंकि दुनिया की भेड़-चाल है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''एक के पीछे दूसरा चलता है लेकिन उन्हें परमार्थ की कोई सूझ-बूझ नहीं होती। एक भेड़ खड्डे में चली जाए तो सारी भेड़े पीछे ही चली जाएंगी। बाड़े में आग लग जाती है अजाली लोग तरस खाकर भेड़ों को बाहर निकालते हैं लेकिन भेड़े सोसायटी को नहीं छोड़ती, वहीं चली

जाती हैं।'' जिन पर अल्लाह-भगवान अपनी मेहर करता है जिनसे अपनी भक्ति करवाना चाहता है वे जीव दुनिया की नकल नहीं करते।

फरीदा दिल रत्ता इस दुनी स्यों दुनी न कितै कंम।।
मिसल फकीरां गाखड़ी सो पाईऐ पूर करंम।।

फरीद साहब कहते हैं, ''दिल दुनिया में रच गया है लेकिन अच्छी तरह विचार करके देखा है कि आज हम दुनिया की जिन वस्तुओं के लिए परेशान हुए बैठे हैं इनमें से कोई वस्तु हमारे साथ नहीं जाएगी। फकीरों की मजलिस, फकीरों का सतसंग ऊँचे भाग्य वालों को ही मिलता है अगर भाग्य न हो तो हम सतसंग में जाकर सो जाएंगे या वहाँ कोई नुख्स निकालकर चले आते हैं कि इनको बोलना नहीं आता मैं ज्यादा पढ़ा-लिखा हूँ, मैं अच्छी तरह बोल सकता हूँ। अगर कोई पढ़ा-लिखा महात्मा सतसंग करता है तो हम कहते हैं कि यह बहुत अच्छा फिलोस्फर है इसको अच्छा बोलना आता है लेकिन सन्तों का मतलब जीवों के ऊपर दया करना है। सन्त सतसंग के वक्त जीवों के ऊपर अपने वचनों का अमृत छिड़क रहे होते हैं लेकिन भाग्यशाली जीव ही उनसे फायदा उठाते हैं।'' गुरु अमरदास जी महाराज कहते हैंः

अमृत भिन्नी देहोरी अमृत बरसे रामराजे।

गुरु अमृत की गागर होता है उसके मुँह से अमृत ही बरसता है। वह जीवों के फायदे के लिए ही बोलता है। हम ऐसे महात्मा की संगत तभी पा सकते हैं जब हमारे पूरे कर्म हों। जिनके पूरे कर्म हैं वही संगत के अंदर आते हैं। महात्मा उन्हें जो कहते हैं वे उसे हदीश, आकाशवाणी या रब का हुक्म समझते हैं। ऐसे भी जीव होते हैं जो उन महात्माओं के अंदर नुख्स निकालकर चले आते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

कोई आए भाव ले कोई ले अभाव।
सन्त दोहां नू पोसदे भाव न गिने अभाव।।

कोई प्रेम लेकर आता है कोई अभाव लेकर आता है लेकिन सन्तों का प्यार दोनों के लिए एक जैसा होता है। वही फायदा उठाएगा जो उनकी बात पर ऐतबार करेगा।

गुरु बेचारा क्या करे जे सिखण में चूक।
अंधे एक न लग्गी ज्यों वाँस बजाई फूँक।।

जिनको संगत का रस आ गया उन्होंने दुनिया की परवाह नहीं की, उन्होंने सतसंग के रस को नहीं छोड़ा।

पहलै पहरै फुलड़ा फल भी पच्छा रात।।
जो जागंन लहंन से साईं कंनों दात।।

जिस तरह बाग के अंदर पौधे हैं पहले पौधे पर फूल आता है, फूल के बाद फल आता है। रात के पहले हिस्से में जो भजन किया जाता है वह फूल के समान है और पिछली रात का भजन फल के समान है। हम शाम को जो भजन करते हैं यह न समझें कि हमारा वह भजन बेकार जाएगा मालिक की याद में बिताया हुआ एक सैकण्ड भी लेखे में होता है।

बाबा जयमल सिंह कहा करते थे, ''जब जीव सब तरफ से ख्याल को हटाकर शब्द-धुन सुनता है तब उसकी हाजिरी सचखण्ड में लग जाती है।'' जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे हमें बहुत प्यार से बताते हैं कि जब भी कोई जीव शब्द-नाम की कमाई के लिए बैठता है तब आकाश से देवता भी उसकी तरफ झाँकते हैं कि कलयुग में यह जीव भजन में बैठा है, मालिक के साथ जुड़ने की तैयारी में लगा हुआ है।

पिछली रात का महातम इसलिए है कि हम सोकर उठे होते हैं उस वक्त आत्मा ने शरीर में नया-नया प्रवेश किया होता है। उस समय गलियों-बाजारों में शोर नहीं होता, हम दिन भर के ख्याल भूले होते हैं। उस वक्त सुरत को शरीर के रोम-रोम में से निकालना आसान हो जाता है, हम वह फल प्राप्त कर लेते हैं।

किसी आदमी ने बाबा जयमल सिंह जी के पैरों पर माथा टेका आप नाराज हुए। सन्त अपने ध्यान में होते हैं। हम जीव उनके पैरों पर गिर जाते हैं, कई दफा गिरने का भी खतरा हो जाता है। एक प्रेमी नजदीक ही खड़ा था उसने कहा महाराज जी! दया करें। बाबा जी ने कहा दया का वक्त होता है। मैं हर सतसंगी के पास सुबह तीन बजे दया की टोकरी लेकर जाता हूँ जो जागते हैं वे दात ले लेते हैं जो सोए होते हैं मैं उनके पास से खड़ा होकर वापिस आ जाता हूँ।

दातीं साहिब संदीआं क्या चलै तिस नाल।।
इक जागंदे ना लहन इकना सुत्तयां देय उठाल।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''दुनिया दाते को छोड़कर दातों की भक्ति करती है, दातों के साथ प्यार करती है। इसमें से कोई ऐसी वस्तु है जो हम साथ ले जाएंगे? एक जागते हुए भी उसको प्राप्त नहीं करते और एक ऐसे भी हैं जिनके दिल में सन्तों से मिलाप की तड़प है।''

बाबा जयमल सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हम प्रभु की खोज़ में लगे हुए हैं तो वह वक्त भी भक्ति में गिना जाएगा।''

हुजूर महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरूर मिलती है, परमात्मा हमारे मिलाप का इंतजाम जरूर करता है।''

आप देख लें! किस तरह हुजूर कृपाल को बाबा सावन सिंह जी सात साल पहले से ही दर्शन देते रहे। क्या यह सोए हुए को उठाकर देने वाली वस्तु थी? महाराज सावन सिंह जी को बाबा जयमल सिंह जी नहीं मिले थे। बाबा जयमल सिंह जी के आश्रम से कोहमरी पहाड़ का पाचँ-छह सौ किलोमीटर का फासला था आपने वहाँ जाकर उन्हें दात देने के लिए ढूँढ़ा।

जब बाबा जयमल सिंह जी वहाँ से गुजरे तो महाराज सावन सिंह जी ने सोचा कि कोई बुजुर्ग आदमी कचहरी में आया है, शायद! कमिश्नर की कचहरी में पेंशन का काम होगा। जब आप वहाँ से निकले तो आपने बीबी रूक्को से कहा, ''हम इस सरदार की खातिर यहाँ आए हैं।'' बीबी रूक्को ने कहा, ''इन्होंने तो आपको सत श्री अकाल तक भी नहीं बुलाई।'' बाबा जयमल सिंह जी ने बीबी रूक्को से कहा, ''यह आज से चौथे दिन अपने सतसंग में आ जाएगा। स्वामी जी इससे काम लेना चाहते हैं इसे नहीं पता कि इसके भाग्य में क्या है?''

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि वाक्य ही मैं चौथे दिन बाबा जयमल सिंह जी के सतसंग में चला गया। जब बाबाजी का सतसंग सुना तो मेरे अंदर से बाईस साल के शक-शकुक एक-एक करके निकल गए। मैंने नाम लेने के लिए गर्दन नीची कर दी, बाबा जयमल सिंह जी ने भरपूर कर दिया।

यही हालत इस गरीब आत्मा की थी। मुझे न कोई हजूर महाराज कृपाल का प्रशंसा करने वाला मिला न मुझे कोई उनकी निन्दा करने वाला मिला। क्या यह कौतुक नहीं था कि पाँच-छह सौ किलोमीटर की दूरी से कोई साधु किसी बंदे को भेजकर यह कहलवाए कि मैंने फलाने आदमी से मिलने के लिए आना है। मैं

उसे जानता नहीं जिससे वह मिलवाना चाहता है लेकिन वह उसे महाराज कहता है। आप देखें! किसी इंसान को महाराज समझ लेना बड़ा ही मुश्किल होता है क्योंकि वह भी हमारे जैसी क्रियाओं में लगा होता है लेकिन मेरी जिंदगी का बैकग्राउंड आप लोगों को पता है कि मैं कितने सालों से उनकी याद में बैठा था। मुझे दिन-रात किसी चीज़ की होश नहीं थी, मैं बचपन से ही पूरा नाम मिले बिना रातों को जागता रहा।

एक बंदा हर रोज मेरे पास रात को आठ बजे आता और दस बजे अपने घर चला जाता। इस तरह रोज रात को हमारी दो घंटे की महफिल थी। यह बात हँसने वाली भी है और इसमें ज्ञान भी है। एक रात मैं लेटा हुआ था। मैंने सोचा कि कोई वक्त आएगा तू मर जाएगा। तेरे आस-पास लोग बैठे होंगे। तू बिल्कुल सिर नहीं हिला सकेगा, हाथ भी नहीं हिला सकेगा। मैं इन ख्यालों में था कि वह बंदा आ गया।

पहले मैं उठकर हमेशा उसको सत-श्री अकाल बोलता, जी आया नूं बोलता और उसे प्यार से बिठाता लेकिन उस दिन मैंने उसे कुछ नहीं कहा और न ही मुझे पता लगा कि वह प्रेमी मेरे पास आकर खड़ा हो गया है। आखिर वह बोला आज क्या बात है आप बोले नहीं क्या सो गए हैं? जब उसका बोल सुना तो मुझे होश आई। मैं उठा और मैंने कहा कि भाई! मैं सोया नहीं था मैं शेखचिल्ली की तरह मरा हुआ था। तेरी आवाज सुनी तो मैं जाग पड़ा, जाग तो मैं पहले ही रहा था पर तेरी आवाज सुनकर बोल पड़ा। अब आप सोचकर देखें! वह कौन-सी तड़प थी जो नौजवान उम्र में ऐसे ख्याल पैदा करे कि भई! तू मरा हुआ है, मरे हुए की क्या हालत है? बंदे पास ही बैठे नजर आएं।

हुजूर को यह तड़प मंजूर थी, हुजूर आए। जिसको रब मानना हो बंदा उससे यह न पूछे कि तेरी क्या जाति है, तू त्यागी है या गृहस्थी है, तू कहाँ रहता है? मैंने अपने गुरुदेव से ऐसे सवाल नहीं किए। आपने मुझे जो रास्ता दिया मैं ईमानदारी के साथ उस रास्ते पर चल सका। मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने मुझ सोए हुए को उठाकर अपनी भक्ति में लगाया।

ढूढेंदीए सुहाग कू तौ तन काई कोर।।
जिन्हां नाओं सुहागणी तिन्हां झाक न होर।।

किसी ने फरीद साहब के पास आकर सवाल किया कि महाराज जी! हम बैठते भी है, खोज भी करते हैं इस रास्ते पर चलने की कोशिश भी करते हैं, पाप नहीं करते फिर भी हमें परमात्मा क्यों नहीं मिलता? हमें भी कोई पति मिले जिससे हमारी आत्मा सुहागन हो। फरीद साहब ने उससे कहा, ''देख प्यारेया! सुहागन दूसरे आदमी से उम्मीद नहीं रखती कि वह मुझे कुर्ता-पायजामा लाकर देगा या खाने को लाकर देगा। पति भूखा है तो उसे उसमें भी सब्र है, पति जंगल में है तो वह उसकी सेवा करके खुश है। सुहागनें किसी से कोई उम्मीद नहीं रखती।''

इसी तरह जो गुरु की भक्ति करता है वह किसी देवी-देवता से कोई उम्मीद नहीं रखता कि वह मेरी मदद करे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि चाहे सुख है चाहे दुख है वह गुरु का ध्यान करता है ताकि कर्म जल्दी कट जाएं।

आप कहते हैं, ''प्यारेया! तू अभी वैसी सुहागन नहीं बनी। सुहागनें अपने पति के अलावा किसी से उम्मीद नहीं रखती। जो गुरु के भक्त बन जाते हैं वे गुरु के अलावा किसी से कोई उम्मीद

नहीं रखते।'' मैं अपने गुरु के आगे यह लफ्ज़ उनकी दया से ही निकाल सका था कि मैंने कोई परमात्मा नहीं देखा, खुदा नहीं देखा, कोई रहीम नहीं देखा मैंने तो तुझे ही देखा है, मेरा तुझमें ही विश्वास है। आप सोचकर देखें! जिसे आप पहले न मिले हों, जिसे आप न जानते हों उस पर इतना बड़ा विश्वास कर लेना जीव की ताकत नहीं इसमें भी उनका ही हाथ था।

फरीद साहब कहते हैं, ''प्यारेया! सुहागनों की ये हालत होती है कि वे किसी दूसरे से उम्मीद नहीं करती कि वह आकर मेरी मदद करे। उन्हें गुरु की भक्ति, गुरु के ऊपर विश्वास होता है।''

सबर मंझ कमाण ए सबर का नीहणो।।
सबर संदा बाण खालक खता न करी।।

अब फरीद साहब उस प्रेमी को समझाते हैं, ''तू सब्र की कमान बना और संतोष से जो भी बाण छोड़ेगा वह खाली नहीं जाएगा।'' गुरु नानकदेव जी कहते है :

गुरुमुख बोले सो थाए-पाए, मनमुख बोलया थाए न पाए।

जब हम सब्र-संतोष से परमात्मा की भक्ति करते हैं तब ऐसी आत्मा के मुँह से जो आवाज निकलती है उसे परमात्मा सुनता है।

जो बोले पूरा सतगुरु सो परमेश्वर सुणया।
सोई वरतेया जगत में घट-घट में रूनया।।

दुनिया में सन्तों का विरोध करने वाले भी बहुत होते हैं, सन्त विरोधता करने वालों के साथ भी प्यार करते हैं। सन्त परमात्मा के आगे यह अरदास करते हैं कि हे परमात्मा! तू इन लोगों को सब्र बख्श इनका दिमाग ठण्डा रख, इनके ऊपर भी दया कर। जो किसी को बद्दुआ दे दे उसे सब्र वाला नहीं कहा जा सकता अगर

गरीबी आ गई उस वक्त रब में नुख्स निकाला तो उसे संतोषी नहीं कहा जा सकता।

हमें पता नहीं कि हमने भगवान से क्या माँगना है? हम जो वस्तुएं माँगते हैं वे हमें मिल जाती हैं फिर उन वस्तुओं से बहुत दुःख और परेशानियाँ पैदा हो जाती हैं तब हम घबराते हैं। फरीद साहब उससे कहते हैं कि प्यारेया! तू सब्र की कमान और संतोष का चिल्ला बना फिर परमात्मा तेरे बाण को बेकार नहीं जाने देगा।

सबर अंदर साबरी तन एवैं जालेन।।
होन नजीक खुदाय दै भेत न किसै देन।।

महात्मा कुदरत के नियमों के मुताबिक बिल्कुल साधारण जिंदगी जीते हैं, उनमें कमाल का सब्र और दृढ़ता होती है। वे कभी भूलकर भी किसी के आगे यह नहीं कहते कि हमें भगवान मिला है, हम भगवान के दूत हैं या हम रब-रहीम है। अगर तन पर कोई कष्ट है तो उसे झेल लेते हैं क्योंकि सब्र तभी हो सकता है अगर हम कष्ट को झेल लें।

रोम के राजा के इतिहास की एक घटना है कि एक बार उसके दरबार में सब्र और संतोष के ऊपर सवाल आया। राजा ने अपने मंत्रियों से पूछा, ''सब्र और संतोष का क्या मतलब है?'' राजा के दरबार में बहुत पढ़े-लिखे बुद्धिमान लोग थे। उन सबने उस सवाल का जवाब अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार देने की कोशिश की लेकिन राजा की तसल्ली नहीं हुई। राजा ने अपने प्रधानमंत्री को बुलाया और उससे भी इस बारे में पूछा कि इस सवाल का क्या मतलब है? प्रधानमंत्री ने सब्र और संतोष के बारे में समझाने की कोशिश की लेकिन वह भी राजा की तसल्ली नहीं करवा सका।

राजा ने अपने प्रधानमंत्री से कहा मैंने सुना है कि भारत में एक बहुत बड़ा बादशाह औरंगजेब है। वह बहुत विद्वान और पढ़ा-लिखा बादशाह है, उसके दरबार में बहुत अच्छे मंत्री हैं। तुम वहाँ जाकर उनसे इस सवाल के बारे में पूछो। शायद वे तुम्हें सही जवाब दें लेकिन तुम तभी वापिस आना जब तुम संतुष्ट हो जाओ।

अगर वे लोग तुम्हें संतुष्ट न कर सकें तो तुम वहाँ एक फकीर को ढूंढ़ना जिसका नाम शर्मद है। मैंने यह सुना है कि शर्मद बहुत उच्चकोटि के फकीर हैं, वह इस सवाल का जवाब दे पाएंगे। तुम भारत जाओ और इस सवाल का जवाब लेकर आओ कि सब्र और संतुष्ट होने का क्या मतलब है?

प्रधानमंत्री भारत गया और औरंगजेब से मिला। प्रधानमंत्री ने औरंगजंब से सब्र और संतोष का सवाल पूछा। औरंगजेब बहुत विद्वान था उसने प्रधानमंत्री को समझाने की कोशिश की लेकिन प्रधानमंत्री उसके जवाब से संतुष्ट नहीं हुआ। प्रधानमंत्री ने और लोगों से भी बातचीत की सबने बेहतर तरीके से समझाने की कोशिश की लेकिन प्रधानमंत्री संतुष्ट नहीं हुआ।

आखिर प्रधानमंत्री ने लोगों से शर्मद फकीर के बारे में पूछा तो वहाँ के लोगों ने बताया कि औरंगजेब बहुत कट्टर धार्मिक किस्म का व्यक्ति है। औरंगजेब ने बहुत सारे साधु-फकीरों को कत्ल भी करवा दिया है कि मुझे करामात दिखाओ लेकिन सन्त **प्रभु के हुक्म** में रहने को ही बड़ी करामात समझते हैं। औरंगजेब ने शर्मद को कैद करके कई ताले लगाकर जेल में रखा हुआ है। शर्मद को कोड़े लगते हैं शर्मद को खाने के लिए एक रोटी पीने के लिए एक प्याला पानी और थोड़ा सा नमक मिलता है। उसके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं, उसे ढूंढ़ना बहुत ही मुश्किल काम है।

आखिर प्रधानमंत्री पूछते-पूछते शर्मद फकीर के पास पहुँच गया। वहाँ जाकर उसने आवाज दी अंदर रोशनी नहीं थी। शर्मद ने सलाखों के पास आकर कहा, ''मुझे किसने आवाज दी है?'' तभी कोड़े लगाने वाला जल्लाद आ गया जिसकी बहुत भयानक शक्ल थी उस जल्लाद ने शर्मद को बहुत कोड़े लगाए लेकिन शर्मद ने चुप करके उन कोड़ो को बर्दाश्त कर लिया। तभी एक आदमी जौं की रोटी और एक प्याला पानी लाया शर्मद ने अल्लाह ताला को भोग लगवाकर खुश होकर वह रोटी खा ली।

फिर प्रधानमंत्री ने शर्मद से अपना सवाल पूछा, ''सब्र और संतोष का क्या मतलब है?'' शर्मद ने कहा कि मैं तुम्हें इस सवाल का जवाब दे चुका हूँ लेकिन तुम्हें समझ नहीं आया। तुम कल एक बड़ी सी चादर और पानी से भरी हुई चमड़े की मश्क लेकर मेरे पास आना फिर मैं तुम्हारे सवाल का जवाब दूंगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि यहाँ ताले लगे हुए हैं। शर्मद ने कहा जो मालिक तुझे रोम से यहाँ लेकर आया है वह तुझे अंदर भी ले आएगा।

अगले दिन जब प्रधानमंत्री वहाँ पहुँचा कुदरत ने साथ दिया ताले वगैरहा खुल गए। शर्मद ने उस पानी से हाथ-मुँह धोया बदन को चादर से साफ किया और कहा, ''भई प्यारेया! तू यहीं मेरे पास अभ्यास में बैठ जा, मैं भी बैठ जाता हूँ। मैं जब तुझे उठाऊँ तभी उठना है बोलना नहीं।'' वहाँ प्रधानमंत्री ने देखा कि परमात्मा के दरबार में दूसरी आत्माएं शर्मद से बातचीत कर रही थी कि औरंगजेब तुझे इतने कष्ट दे रहा है तू कहे तो हम इसकी बादशाही को नष्ट कर सकते हैं। हम दिल्ली की ईंट से ईंट बजा सकते हैं तू जो कहे हम करने के लिए तैयार हैं लेकिन शर्मद ने सबको शांत रहने के लिए कहा कि शांति में ही फायदा है। औरंगजेब और

उसके लोगों को कोई नुकसान न पहुँचाया जाए उसे माफ कर दें क्योंकि वह नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है?

प्रधानमंत्री यह देखकर बहुत हैरान हुआ कि शर्मद परमात्मा के ही रूप हैं। उनके पास परमात्मा की सारी शक्तियां हैं फिर भी उनके अंदर परमात्मा की रजा में इतना सब्र है वे नहीं चाहते कि औरंगजेब को कोई नुकसान पहुँचाया जाए। जब शर्मद प्रधानमंत्री को नीचे लाए तो शर्मद ने प्रधानमंत्री से पूछा, ''अब तुम्हें तुम्हारे सवाल का जवाब मिल गया है? अगर तुम्हारे पास परमात्मा की दी हुई सब शक्तियां हैं लेकिन तुम उन शक्तियों का इस्तेमाल नहीं करते तो इसका मतलब है कि तुम परमात्मा की रजा में संतुष्ट हो।''

शेख फरीद कहते हैं कि पूर्ण गुरु परमात्मा के प्यारे होते हैं, उनमें बहुत सब्र होता है। वे परमात्मा के पास रहते हैं फिर भी लोगों को यह नहीं बताते कि वे परमात्मा में मिले हुए हैं। जैसे शर्मद प्रधानमंत्री को ऊपर लेकर गए और उसे दिखाया कि सब कुछ परमात्मा की रजा में हो रहा है तो हमें भी परमात्मा की रजा में संतुष्ट रहना चाहिए।

जिस तरह शर्मद ने प्रधानमंत्री को सच्चाई दिखाई थी उसी तरह बाबा सावन सिंह ने महाराज कृपाल को सच्चाई दिखाई थी। जब बाबा सावन सिंह जी अपने जीवन के अंत समय में बहुत तकलीफ से गुजर रहे थे तब उनके प्यारे बेटे कृपाल सिंह जी हर रोज महाराज सावन सिंह जी से यह प्रार्थना कर रहे थे कि आप अपनी तकलीफ दूर करें बाकी नामदान का काम भी आप ही करें।

एक दिन बाबा सावन सिंह जी की मौज उठी तो उन्होंने कृपाल सिंह जी से कहा, ''तू मेरे पास आकर अभ्यास में आँखें बंद करके बैठ और खुद ही देख ले आज सचखंड में फैसला होने जा

रहा है।'' महाराज सावन ने तवज्जो दी आपने वहाँ देखा कि पहुँचे हुए सारे सन्त गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, मौलाना रूम, शमस तबरेज इस बात पर सहमत हैं कि अभी कुछ समय और बाबा सावन सिंह को संसार में रहने दिया जाए लेकिन बाबा जयमल सिंह जी नहीं माने। बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''इस समय हालात बहुत खराब हैं अब मैं इन्हें संसार में नहीं रहने दूंगा।''

हम अपने अंदर झाँककर देख सकते हैं कि हम दिल में क्या लेकर अभ्यास में बैठते हैं? मालिक अंदर बैठा है हम उसे धोखा नहीं दे सकते। इसी तरह जब मंसूर को सूली पर चढ़ाने लगे तब जल्लादों ने कहा कि तेरे हाथ काटने का हुक्म मिला है। मंसूर ने कहा, ''काट लो मुझे इन हाथों की जरूरत नहीं मेरे पास रूहानियत के वे हाथ हैं जिनसे मैं अर्श पर हाथ डालकर चढ़ सकता हूँ।'' फिर जल्लादों ने कहा कि तेरे पैर काटने का हुक्म है। मंसूर ने कहा, ''मुझे इन पैरों की जरूरत नहीं मेरे पास रुहानी पैर हैं जिनसे मैं सचखंड पहुँच सकता हूँ।'' फिर जल्लादों ने कहा कि तेरी आँखें निकालनी है। मंसूर ने कहा, ''निकाल लो मुझे इन आँखों की जरूरत नहीं मेरे पास वे आँखें हैं जो परमात्मा को देखती हैं।'' सब कुछ काटकर जब उन्होंने कहा कि तेरी जुबान काटनी है तब मंसूर ने कहा, ''एक मिनट रूको मैं इस जुबान से थोड़ा-सा अपने गुरुदेव का, परमात्मा अल्लाह-ताला का शुक्र कर लूँ कि यह मेरी ताकत नहीं थी कि मैं इस इम्तिहान में पास हो जाता, यह सब तेरी ही दया है कि मैं पास हो रहा हूँ।''

परमात्मा ने मंसूर से कहा, ''तू जो कहे मैं इन्हें वह सजा दे सकता हूँ।'' मंसूर ने कहा, ''मैं तो यह कहूँगा कि इन पर भी दया करें ताकि ये मुझे पहचान लें कि मेरे दिल में इनके लिए क्या है?''

आपको पता है कि गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाया गया, आपके सिर में उबलता हुआ गर्म पानी डाला गया और हर तरह की अमानवीय यातनाऐं दी गईं। आपका मित्र मियाँ मीर आपके पास गया और उसने आपसे कहा, ''गुरुदेव! आप मुझे हुक्म दें मैं लाहौर की ईंट से ईंट बजा सकता हूँ।'' गुरु अर्जुनदेव जी ने उससे कहा, ''यह तो मैं भी कर सकता हूँ लेकिन मेरे लिए **प्रभु का हुक्म** मानना जरूरी है।''

तेरा भाणा मीठा लागे नाम पदार्थ नानक माँगे।

जिस चंदू सवाई के हुक्म से गुरु अर्जुनदेव जी को कष्ट दिए जा रहे थे उस घर की बहू गुरु अर्जुनदेव जी की नामलेवा थी। जब बहू को पता लगा तो वह रात के समय घर से निकली कि मैं गुरु साहब के दर्शन करके आऊँ। जिसके गुरु के साथ इस तरह का सुलूक हो रहा हो वह बंदा क्या नहीं करता! सिपाहियो ने उस औरत को रोक लिया। उस औरत ने सिपाही के पैर पकड़कर कहा, ''इस समय मैं बहुत दुखी हूँ मुझे गुरु साहब के दर्शनों के लिए जाने दिया जाए।''उसके पास जो भी गहने थे वे उसने सिपाहियों को दे दिए। वहाँ एक महात्मा कथन करता है कि उसने क्या कहाः

भाणा वरत गया आज लाहौर ऊत्ते,सोहणी जिंदड़ी दुखड़े सही जांदी।।
तत्ती लौ उत्ते बैठे गुरु अर्जुन, ते तत्ती रेत सीस ते पई जांदी।।
ऐस वेलड़े थम्मिया कौन देवे, मेरी अंदरों जिंदड़ी ढई जांदी।।

सबर एह सुआओ जे तूं बंदा दिढ़ करेंह्।।
वध थीवह दरीआओ टुट न थीवह् वाहड़ा।।

अब आप कहते हैं कि उसी सब्र का फायदा है जिस पर वह आखिरी वक्त तक दृढ़ रहे। ऐसा न हो जैसे दरिया का किनारा टूट जाता है तो वह सब कुछ बहाकर ले जाता है उसी तरह कहीं सब्र

रखता-रखता लोगों को बद्दुआ देने लग जाए, करामातें दिखाने लग जाए तो ऐसे सब्र का भी क्या फायदा? महात्मा चतुरदास कहते हैंः

चतुरदास तदे नक रहेंदा निभ जावे जे ओट प्रभो।

जिंदगी में बहुत से उतार-चढ़ाव आते हैं जो बंदा उस वक्त अडोल रह गया, उसने सब्र रख लिया तो वह बच जाएगा। मैं एक महात्मा की कहानी सुनाया करता हूँ। एक महात्मा अपने शिष्यों के साथ जब बाजार जाते तो रास्ते में एक नौजवान वेश्या का घर था। महात्मा जब उस रास्ते से निकलते तो वेश्या उनसे सवाल करती, ''महात्मा जी! मुँह पर दाढ़ी है या झाड़ी है?'' महात्मा चुप रहते।

जब महात्मा का अंत समय आया तो उन्होंने उस वेश्या को बुलाकर कहा, ''बेटी! तू आज वह सवाल कर?'' वेश्या ने कहा कि मैं आपसे रोज पूछती थी तब आपने जवाब नहीं दिया? महात्मा ने कहा इस समय मेरी चिता तैयार है लेकिन मन का क्या पता यह कब धोखा दे जाए! आज मैं अपनी दाढ़ी साबुत लेकर जा रहा हूँ।

फरीद साहब की जिंदगी की एक जबरदस्त घटना है। आप अपने गुरु के चरणों में सेवादार के रुप में काम करते थे। आप सुबह पानी लाकर गरम करते फिर अपने मुर्शिद को नहलाते। उस समय आज की तरह बिजली के साधन नहीं थे लोग आग जलाया करते थे। एक दिन फरीद साहब के घर की आग बुझ गई, उस समय आज की तरह माचिस वगैरह नहीं थी।

नज़दीक ही एक वेश्या का घर था। उसके घर से हुक्के की आवाज आ रही थी नौकरों ने हुक्के में आग रखी हुई थी। फरीद साहब वेश्या के घर चले गए। वेश्या आपको हमेशा ही काम-भरी आँखों से देखती। वेश्या ने फरीद साहब से कहा, ''मेरे पास बहुत

लोग आते हैं लेकिन तू कभी नहीं आया।'' फरीद साहब ने अपनी आँखें नीचे कर ली और अपने गुरु का ध्यान करने लगे।

वेश्या ने सोचा कि मैं इस मौके से फायदा उठाऊँ। उसने फरीद साहब से कहा, ''तू आज कैसे आया है?'' फरीद साहब ने कहा, ''हमारी आग बुझ गई है मैं आग लेने आया हूँ, मैंने अपने मुर्शिद को स्नान करवाने के लिए पानी गरम करना है।'' वेश्या ने कहा कि यहाँ आग मुफ्त नहीं मिलती, मोल से मिलेगी। फरीद साहब ने कहा, ''बहन जी! क्या मोल लेंगी?'' वेश्या ने कहा, ''आँख।''

फरीद साहब ने किसी भी तरफ नहीं देखा ऊंगली डाली और अपनी आँख निकालकर उसके आगे रख दी। यह देखकर वेश्या की आत्मा अंदर से काँप गई कि मैंने तो इससे मजाक किया था लेकिन यह मेरे ख्याल को नहीं समझा इसने तो सचमुच आँख निकालकर मेरे हाथ पर रख दी।

फरीद ने सोचा कि मुर्शिद को पता न लग जाए उसने जल्दी से आँख पर पट्टी बाँध ली। पानी गरम किया मुर्शिद के आगे रखा। मुर्शिद ने फरीद की तरफ देखकर कहा, ''ओ फरीद! तूने पट्टी क्यों बाँधी है?'' फरीद ने कहा, ''महाराज जी! आँख आई हुई है।'' हम पंजाबी लोग आँख दुखती हो या चोट लगी हो तो यही कहते हैं कि आँख आई है। मुर्शिद ने कहा, ''बेटा! जब आँख आई है तो पट्टी क्यों बाँधी है, पट्टी खोल दे।'' यह सहज-स्वभाव ही मुर्शिद के मुँह से निकला था देखा तो वह आँख दूसरी आँख जैसी ही थी।

यह कोई करामात नहीं इसमें किसी का कोई नुकसान नहीं। हम फकीरों की कहानियां पढ़कर वक्त के सन्तों के ऊपर अभाव ले आते हैं कि उन्होंने तो ऐसा किया लेकिन हम यह नहीं देखते कि इसमें शिष्य की कितनी बहादुरी थी?

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कुदरत ही उनका रुप धारण करके कारोबार करने लग जाती है क्योंकि सन्तों के मुँह से निकला हुआ बाण परमात्मा खाली नहीं जाने देता।''

फरीदा दरवेसी गाखड़ी चोपड़ी परीत।।
इकन किनै चालीऐ दरवेसावी रीत।।

फरीद साहब कहते हैं, ''दरवेशों की, साधु-सन्तों की नकल करनी बहुत मुश्किल है। लोग इनकी नकल तो करते हैं लेकिन दुनिया दिखावे की प्रीत करती है। अगर परमात्मा ने धन-पदार्थ दे दिया तो हम कहते हैं कि देखो जी! परमात्मा की कितनी दया है कितना कुछ दे दिया। जहाँ कुछ कमी पेशी हो गई वहाँ परमात्मा में नुख्स निकालना शुरू कर देते हैं।'' बुल्लेशाह ने कहा थाः

जित्थे खड़के तवा परात ओत्थे गाइये सारी रात।

फरीद साहब जंगलों में घूमते थे। शाह सरफ अच्छा कमाई वाला था। उसने सोचा देखा जाए कि फरीद जो बातें करता है वह इन पर चलता है या तप-अभ्यास और कर्मकांड में ही लगा हुआ है। शाह सरफ ने एक यज्ञ आरंभ किया कि साधु-सन्तों को खाना खिलाया जाए। शाह सरफ की पत्नी भी अच्छी कमाई वाली थी। उन्होंने सबको बुलावा भेजा। सबके लिए अच्छा खाना बनाया लेकिन फरीद साहब के लिए शाह सरफ की पत्नी ने बारह साल पुराने चने जो कड़वे हो गए थे उसका भोग तैयार किया जिसमें नमक भी नहीं डाला। सबको खाना दिया सबने खुश होकर खाया।

फरीद साहब ने पहले तो आँखों से उस खाने को देखा फिर जब मुँह में डाला तो वह खाया नहीं गया। शाह सरफ ने पूछा कि सबने खाना खा लिया तो उसे बताया गया कि सबने तो खाना खा

लिया लेकिन फरीद साहब बैठे हैं। शाह सरफ ने फरीद साहब से कहा, ''आप खाना क्यों नहीं खा रहे?'' फरीद साहब ने कहा, ''प्यारेया! यह खाना कड़वा है और इसमें नमक भी नहीं है तू इसमें नमक तो डलवा दे।''

शाह सरफ की घरवाली ने कहा, ''मैंने तो यह खाना फकीरों के लिए बनाया है मुझे क्या पता था कि यहाँ स्वादु भी बैठे हैं।'' उस वक्त फरीद साहब ने अपने आप से कहा, '' ऐ मन! तू परमात्मा के साथ दिखावे की प्रीत करता है और नकल उन दरवेशों, रब के प्यारेयो की करता है, उन्हें जैसा मिला उन्होंने वैसा खा लिया।''

तन तपै तनूर ज्यों बालण हड वलंन।।
पैरीं थक्कां सिर जुलां जे मूं पिरी मिलंन।।
तन न तपाय तनूर ज्यों बालण हड न बाल।।
सिर पैरीं क्या फेड़या अंदर पिरी निहाल।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''अगर परमात्मा मिलता हो मैं पैरों के भार से चलते हुए थक जाऊँ तो सिर के भार चलने के लिए तैयार हूँ। मुझे अपनी हड्डियाँ तंदूर की भट्ठी की तरह भी जलानी पड़ जाएं तो मैं उन्हें जलाने के लिए तैयार हूँ।''

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''देख प्यारेया! पैरों के भार चलने की, हड्डियाँ जलाने की और बाहर शरीर को इतने कष्ट देने की क्या जरूरत है? तू जिस परमात्मा से मिलना चाहता है वह जंगलों-पहाड़ों में नहीं वह प्रीतम तो तेरे अंदर बैठा है। तू बाहर तन को क्यों कष्ट देता फिरता है?''

हौं ढूंढेंदी सजणा सजण मैंडे नाल।।
नानक अलख न लखीऐ गुरमुख देय दिखाल।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''मैं सजना को अच्छे-अच्छे मंदिरों में, अच्छे-अच्छे समाजों में, अच्छे-अच्छे कर्म-काण्डों में ढूंढ़ती थी। मुझे पता नहीं था कि वह सजना परमात्मा चौबीस घंटे सोते हुए, जागते हुए, चलते हुए मेरे साथ ही चलता है।''

अलख परमात्मा को हम लख नहीं सकते। जब हम साधु-सन्तों के पास जाते हैं तो वे हमें प्यार से शब्द-रूप परमात्मा के साथ जोड़ देते हैं, ज्योत के दर्शन करवा देते हैं। हमें अपने कर्मों के मुताबिक थोड़ी बहुत पूँजी जरूर मिलती है। सबके एक जैसे कर्म नहीं होते, मियाँ-बीवी का भी एक जैसा अनुभव नहीं होता।

आप प्यार के साथ कहते हैं, ''यह गुरुमुखों की जायदाद है। उनके अंदर परमात्मा नाद-रूप, ज्योत-रूप में विराजमान होता है, प्रगट होता है। अगर तू भी उनकी शरण में जाए तो तुझे बाहर के कष्ट सहने की जरूरत नहीं है वे तुझे बता देंगे की परमात्मा किस तरह तेरे अंदर बैठा है।''

हंसा देख तरंदयां बग्गां आया चाओ।।
डुब मुए बग बपुड़े सिर तल उपर पाओ।।

आप कहते हैं, ''समुंद्र के अंदर हंस बहुत लंबी तारी लगा रहे थे क्योंकि हंस में लंबी से लंबी तारी लगाने की शक्ति होती है। कौए की उड़ान बहुत छोटी होती है। कौआ यहाँ से उड़कर थोड़ी देर बाद फिर बैठ जाता है। बगुले की तारी भी छोटी होती है। हंस तैर रहे थे जब बगुले ने हंस की नकल की पानी में तैरने लगा तो उसका सिर नीचे और टाँगे ऊपर आ गई, वह डूबकर मर गया।''

मस्ताना जी कहा करते थे, ''जो पाखंडी लोग यह कहते हैं कि मैं हाथ लगाकर प्रशाद कर दूँ लेकिन उनकी कमाई नहीं। यह

किसी की आत्मा के साथ धोखा करना है, यह पाप सात जन्म तक नहीं उतरता। प्रेमी बहुत कद्र के साथ प्रशाद खाते हैं और कद्र के साथ रखते हैं।'' मैंने देखा है कि लोग अभी भी बाबा जयमल सिंह जी के हाथों का प्रशाद रखकर बैठे हैं, उन लोगों में कितना विश्वास है।

मैं जाणया वडहंस है तां मैं कीता संग।।
जे जाणां बग बपुड़ा जनम न भेड़ी अंग।।

गोईंदवाल में गुरु अमरदेव जी के पास एक पाखंडी साधु आया। गुरु महाराज ने भेष देखकर उसका अच्छा आदर-मान किया, गुरु महाराज उसे अपने बराबर बिठाते थे। गुरु साहब के पास अच्छे मनको की एक कीमती माला थी जिससे वह सिमरन किया करते थे। उस पाखंडी का माला की तरफ ध्यान था कि कब मौका लगे और मैं यह माला उठाकर ले जाऊँ।

एक दिन गुरु साहब उस माला को वहीं छोड़कर दूसरी तरफ चले गए। उस पाखंडी ने माला उठाकर अपने तकिए के नीचे रख ली। सब जगह ढूँढ़ लिया लेकिन माला कहीं नहीं मिली। हवा आई उसके तकिए से कपड़ा उड़ गया, सिक्खों ने माला देख ली और एक सिक्ख ने माला उठाकर कहा कि माला तो यहाँ पड़ी है।

इसी तरह बाबा सावन सिंह के आश्रम में एक भगवे कपड़ों वाला आया। उसने कहा कि मुझे कोई सेवा दें। आप सुबह तीन बजे प्रेमियों को उठाने के लिए घंटी बजाते हैं यह सेवा मुझे देवें। बाबा जी ने उसे यह सेवा दे दी कि यह अच्छा आदमी है। वहाँ एक पटवारी रहता था, भगवे कपड़ो वाला उससे तीन सौ रूपये लेकर डंडी लगा। बस! फिर घंटी किसने बजानी थी? आप हँसकर बताया करते थे, ''वह अभी तक नहीं आया।''

मैंने बाबा बिशनदास जी के आश्रम में देखा है कि वहाँ एक भगवे कपड़ो वाला कभी-कभी आँखें खोलता था। उस वक्त वहाँ पर एक-शब्द और दो-शब्द का अभ्यास करने वाले और भी साधु थे। बाबा बिशनदास जी ने सबको खबरदार किया कि यह पाखंडी है तुम्हारे पैसे उठाकर ले जाएगा। बाकी साधु इस हक में नहीं थे कि बाबा जी का स्वाभाव ऐसा है वह साफ-साफ कह देते हैं।

एक दिन शाम को जब सब खाना खाने के लिए जाने लगे तो उस पाखंडी ने कहा कि मेरी सुरत अंदर से बाहर नहीं आ रही आज मैं खाना खाने नहीं जाऊँगा आप खाना खाकर आ जाएं। जब सब लोग खाना खाकर वापिस आए तो उन बेचारो ने देखा कि उनके तकिओ और पोथिओं में जो दो-चार रूपये थे वे नहीं थे।

बाबा बिशनदास जी का एक सेवादार गुरदयाल सिंह बहुत मजबूत था। वह डंडा लेकर भागने लगा कि अभी तो वह नज़दीक ही होगा उसे पकड़ लेते हैं। बाबा जी ने कहा देखो प्यारेयो! मैंने कितने दिन पहले आपको अपनी जेबें संभालने के लिए कहा था जिसका जो घाटा है वह हम पूरा करेंगे अब उसे जाने दो।

क्या हंस क्या बगला जा कौ नदर धरे।।
जे तिस भावै नानका कागों हंस करे।।

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं, ''देखो भई प्यारेयो! परमात्मा की नजर में न कोई बगुला है न कोई हंस है। वह सबको एक जैसी ताकत देता है सबका प्यार से पालन-पोषण करता है। उसके लिए बगुले से हंस बनाना क्या मुश्किल है वह तो कौए से भी हंस बना देता है। सवाल तो हमारे अंदर शौंक, विरह और तड़प का है। कौए की खुराक़ बिष्टा है। हमारी कौए की वृत्ति कब तक है

जब तक हम विषय भोगते हैं लेकिन जब विषय-विकार भोगने वालो को शब्द-नाम का रस आ जाता है तो वे हंस बन जाते हैं।''

सरवर पंखी हेकड़ो फाहीवाल पचास।।
एह तन लहरी गड थिआ सच्चे तेरी आस।।

आप कहते हैं, ''जीव एक है इसे फँसाने वाली पाँच ताकते हैं। पाँच कर्म इन्द्रियाँ और पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ हैं। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार चौदह हैं। इनके आगे चौदह देवता है। इसी तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं। ये सारी वृतियां मिलकर पचास बन जाती हैं।''

ये सारी वृतियां इस ताक में बैठी हैं अगर बंदा पाप करने से हटता हैं तो इसे पुण्य की तरफ लगा देती हैं। बुराई करने से हटता हैं तो भले कर्मों की तरफ लगा देती हैं। बंदा इनमें मस्त हो जाता है और इन वृत्तियों में से निकलने के लिए तैयार नहीं। इनमें से निकालने वाला गुरु, शब्द, नाम, परमात्मा है लेकिन यह उसकी आवाज नहीं सुनता।

कृष्ण भगवान ने अर्जुन से कहा था, ''देख भई प्यारेया! न हमें नेक कर्म छुड़ा सकते हैं न बुरे कर्म बाँध सकते हैं। अच्छे कर्म सोने की जंजीरें और बुरे कर्म लोहे की जंजीरे हैं। आज हम सड़क पर झाड़ू देते हैं अगर नेक कर्म करते हैं तो झाड़ू हाथ से निकल जाता है महलों में बिस्तर लगा लेते हैं हुकूमत की बागडोर मिल जाती है। आप जो कर्म करते हैं वे आपको भोगने पड़ेंगे।''

कवण सो अक्खर कवण गुण कवण सो मणीआ मंत।।
कवण सो वेसो हौं करी जित वस्स आवै कंत।।

किसी ज़िज्ञासु आत्मा ने आकर सवाल किया, ''फरीद जी! वह कौन-सा अक्षर है, कौन-सा मंत्र है जिसे जपकर मैं पति-परमात्मा को बस में कर लूँ। मैं कौन सा वेश धारण करूं जिससे पति परमात्मा बस में आ जाता है?''

निवण सो अक्खर खवण गुण जिहबा मणीआ मंत।।
ए त्रै भैणे वेस कर तां वस्स आवी कंत।।

फरीद साहब कहते हैं, ''सन्त-सतगुरु जो मंत्र देते हैं सोते-जागते, उठते-बैठते उसका जाप कर। बहने! नम्रता रख, भरोसा रख, यही वेष धारण करने से कन्त तेरे बस में आ जाएगा।''

मत होंदी होय इयाणा।। ताण होंदे होय निताणा।।
अणहोंदे आप वंडाए।। को ऐसा भगत सदाए।।

वही कामयाब होता है जो मत होते हुए भी चालीस दिन के बालक जैसा बन जाता है, अक्ल को दखल नहीं देने देता। जहाँ अक्ल है वहाँ भक्ति कहाँ? जिस तरह शर्मद के पास सब ताकतें थी, वह क्या नहीं कर सकता था? लेकिन उसने भाणां माना।

गुरु गोबिंद सिंह के बच्चे नीवों में चिन दिए, आपका घर-बार लूट लिया, पिता को शहीद कर दिया फिर भी आपने किसी को बद्दुआ नहीं दी। आपके चारों बच्चे शहीद हो गए तो लोगों ने बहुत दर्द दिखाया। तब आपने कहा, ''परमात्मा ने मुझे जो बेटों की दात सौंपी थी, मैंने वह दात परमात्मा को सौंप दी है। मैं आज बेफिक्र होकर सो रहा हूँ।'' कह तो हम सारे ही लेते हैं लेकिन ऐसा करना बहुत मुश्किल है। जिसमें ऐसे गुण हैं वही भक्त कहलवा सकता है।

इक फिक्का ना गालाय सभना मैं सच्चा धणी।।
हियाओ न कैही ठाहे माणक सभ अमोलवे।।

किसी को बुरा वचन न कहें, सबके अंदर वह सच्चा धनी मालिक बैठा है। अगर हम किसी का दिल दुखाते हैं तो परमात्मा का ही दिल दुखा रहे हैं, हम परमात्मा के भक्त नहीं बन सकते।

सभना मन माणक ठाहण मूल मचांगवा।।
जे तौ पिरीआ दी सिक हियाओ न ठाहे कहीदा।।

सबके दिल मानक की तरह हैं। सभी आत्माएं मानकों की तरह प्योर और पवित्र हैं अगर परमात्मा से मिलने की चाह है तो किसी का दिल न दुखाया जाए, दिल दुखाना सबसे बड़ा गुनाह है।

कई बार काल ऐसा कर देता है, सेवादारों को आपस में लड़वाया, एक-दूसरे को चोट लगी। महाराज सावन सिंह जी वहाँ से गुजर रहे थे आपने कहा हाँ भई सुनाओ? एक ने कहा कि इसने मुझे गाली दी तो मैंने इसे डंडा मारा खून निकल रहा है। बाबा जी ने कहा प्यारेया! गाली तुझे कहाँ लगी डंडा तो लगा हुआ दिखाई दे रहा है। हवा आई थी उड़ गई। अब मैं तुम्हें क्या सजा दूँ? जब वह बोलकर वैसा हो गया और तू डंडा मारकर उससे भी बुरा हो गया। अच्छा तो यही था अगर सह लेता।

फरीद साहब ने हमें इन श्लोकों में बड़े प्यार से समझाया है किस तरह **प्रभु के हुक्म** में रहना है। हमारी जिंदगी कैसी होनी चाहिए? आपने हमें जिंदगी भर सब्र-संतोष धारण करने की प्रेरणा दी है। हमारा भी फर्ज बनता है कि हम अपने जीवन को सफल बनाए और **प्रभु के हुक्म** में रहें।

(12 दिसम्बर 1987)

***